भयंकर हंस

लेखक : ईव

पुस्तक के विषय में

हंस पालतू तो है लेकिन परिवार के सिर्फ एक ही सदस्य को वह पसंद करता है, वह है माँ. माँ उसे बगल में उठा कर यहाँ-वहां ले जाती है तो वह कोई विरोध नहीं करता लेकिन वह सूसी और क्रैग पर, और सबसे अधिक पिता पर, चिल्लाता है, फुफकारता है. इसलिये पिता अकसर धमकी देते हैं कि वह हंस को मार कर उसके मांस को खाने के लिये पका डालेंगे.

लेकिन एक रात परिवार के लोग जाग कर देखते हैं कि हंस उस जंगली रेकून से लड़ रहा है जो मुर्गी और चूज़ों का शिकार करने का प्रयास कर रहा है. हंस की बहादुरी सब का दिल जीत लेती है.

इस हास्यपूर्ण कहानी में यह सब घटनायें बड़े रोचक ढंग से बताई गई हैं.

भयंकर हंस
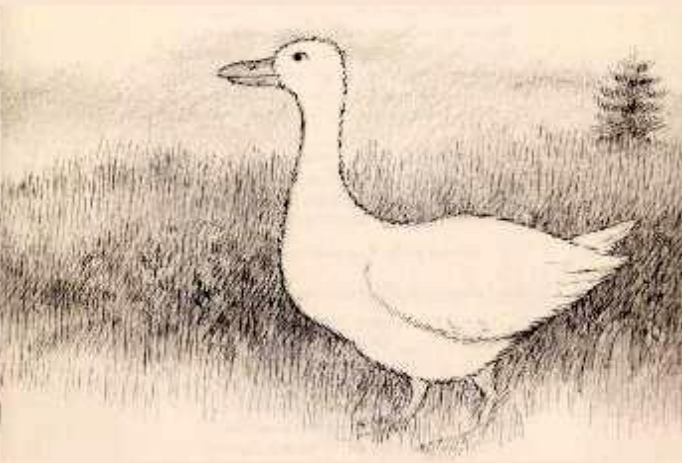
माँ जब हंस को लाई थी तब वह छोटा-सा सफ़ेद, नर्म रोयेंदार गेंद जैसा था. तब किसने सोचा था कि एक दिन वह इतना बड़ा और भयंकर हंस बन जाएगा?

हमारे घर के आँगन का तो वह एक आतंक है. जब क्रिस्टी क्राफोर्ड हमारे घोड़े के पाँव में नाल लगाने आई तो हंस ने पीछे से उसे काट खाया. क्रिस्टी हमारे घोड़े को तब से नाल लगा रही है जब वह छोटा-सा था.

अब हमें नाल लगाने वाला कोई नया आदमी खोजना पड़ेगा.
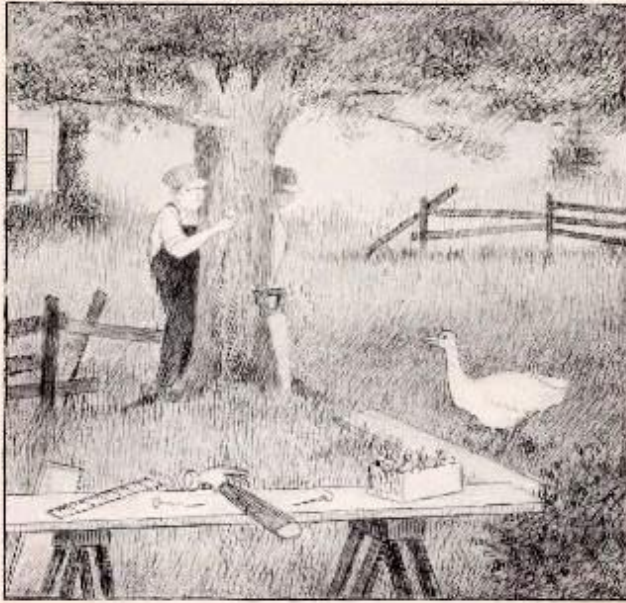
हमारे घर की बाड़ उतनी मज़बूत नहीं है जितनी होनी चाहिए. बाड़ लगाने वाले बाड़ लगाते समय इस हंस के कारण घबराये हुए थे. पिता कहते हैं कि इस बाड़ में एकाग्रता नहीं है. इस बात का अर्थ है कि बाड़ बेकार है.

हंस मुर्ग़ी के चूज़ों को प्यार करता है और वह मुर्ग़ी को भी उनके पास नहीं आने देता. अगर वह आती है तो हंस उसके पंख नोच लेता है. वह चूज़ों को वैसे इकट्ठे कर लेता है जैसे एक कुत्ता भेड़ों को घेर कर इकट्ठा करता है.
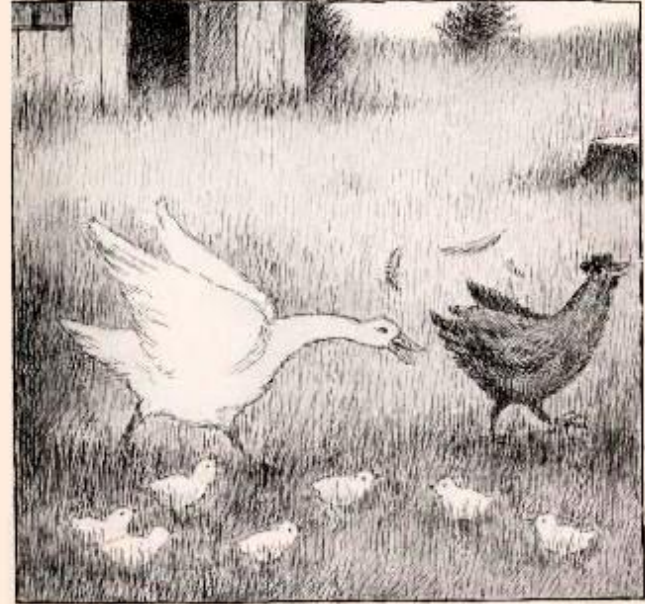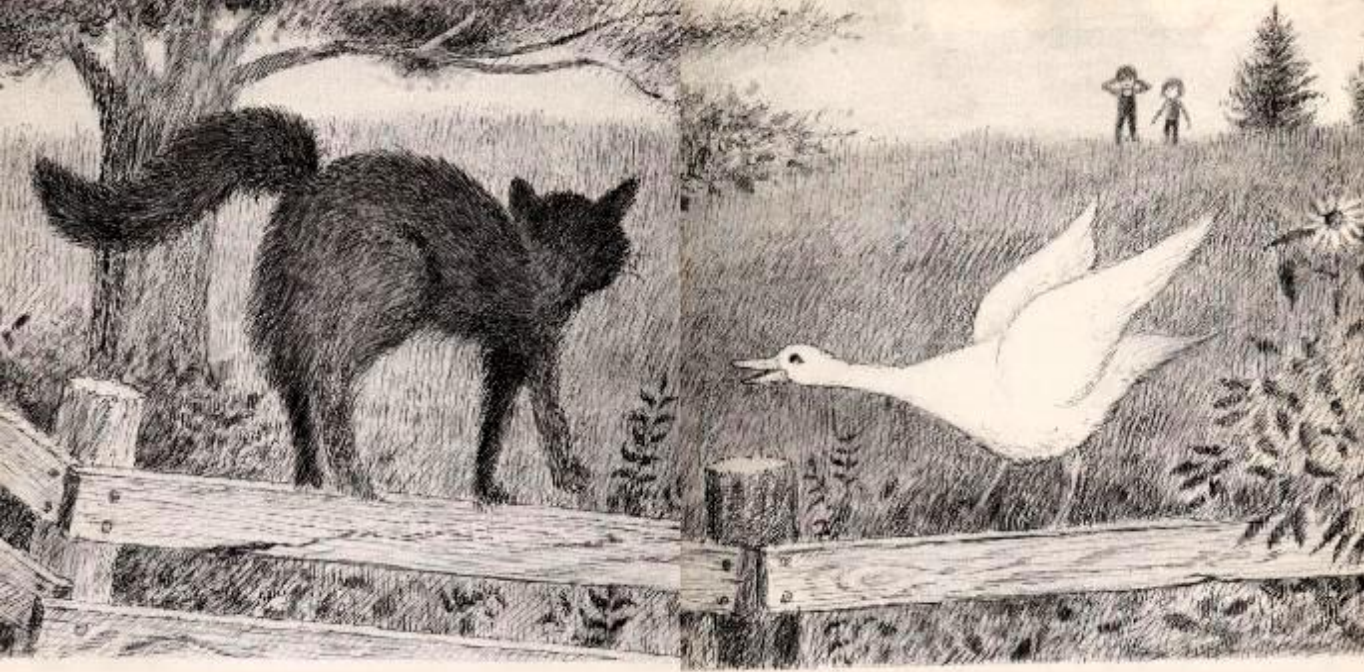
हमारी बिल्ली, प्रीटी, अब कभी भी ज़मीन पर चल कर अहाता पार नहीं करती. वह या तो पेड़ों पर रहती या फिर डावाँडोल बाड़ के ऊपर. दोनों एक-दूसरे को घूरते हैं और एक-दूसरे पर फुफकारते हैं.

हंस को न तो क्रिस्टी क्राफोर्ड अच्छी लगती है और न ही बाड़ लगाने वाले. उसे न मुर्गी, न प्रीटी, न पक्षी, न मैं, न मेरी बहन सूसी.....न हमारे पिता अच्छे लगते हैं. सबसे अधिक वह पिता को नापसंद करता है.
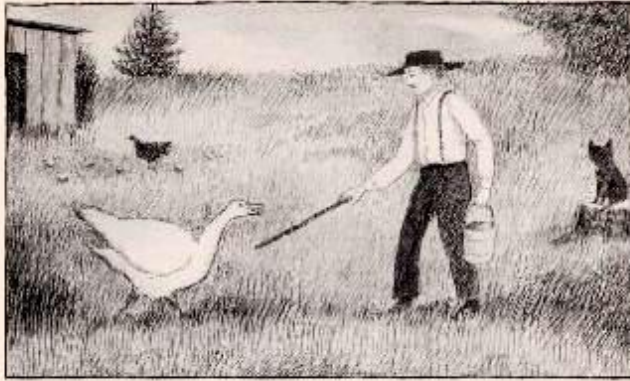
हम उन्हें बाहर नहीं छोड़ सकते क्योंकि हमारी पहाड़ियों में जंगली रेकून रहते हैं. हंस को उसके बाड़े में बंद करना माँ का ही काम है. लेकिन वह भीतर जाता ही नहीं है. वह अहाते में भागता और माँ चिल्लाती हुई पीछे भागती है, 'अब सोने का समय है, मूर्ख हंस!' अकसर वह उसे बाहर ही रहने देती है. मुझे विश्वास है कि अगर सोने के समय सूसी और मैं अहाते में भागें तो माँ कभी भी नहीं हँसेगी. लेकिन सब शैतानियों के बाद भी वह हंस को कुछ नहीं कहती.

पिता तो छड़ी के बिना अहाते में जा ही नहीं सकते. जब हंस उनकी ओर दौड़ा आता है तो वह छड़ी से उसे पीछे धकेलते और चिल्लाते हैं, 'किसी दिन मैं तुम्हें मार कर तुम्हारा मांस खाने के लिये पका डालूँगा.'

उनकी बात सुन कर माँ व्याकुल हो जाती है क्योंकि वह हंस को प्यार करती है. वह उसे अपनी बगल में उठा कर यहाँ-वहाँ ले जा सकती है. माँ ही रात के समय मुर्गी और उसके चूज़ों को उनके दरबे में बंद करती है.

एक बार माँ नगर गई हुई थी. उनके पीछे पिता ने मुर्गी का मांस पकाया.

'यह हंस का मांस है,' उन्होंने माँ से कहा. यद्यपि वह हंस का मांस नहीं था.

गर्मियों की एक अँधेरी रात में हंस की चीख-पुकार सुन कर हम सब जाग गये. पिता जब बिस्तर से उठे तो सूसी और मैंने उनके पलंग के हिलने की आवाज़ सुनी. फिर नीचे जाते समय उनके दनदनाते हुए क़दमों की आवाज़ सुनाई दी. वह अपने-आप से बात कर रहे थे.

'इस पागल हंस ने तो मुझे परेशान कर दिया है. अब क्या ऊधम मचा रहा है? बस, बहुत हुआ. और नहीं सह सकता.'

जब पिता कहते हैं कि वह हंस का मांस पकाएंगे तो हम समझ जाते हैं कि वह माँ को चिढ़ा रहे है. लेकिन आज वह ऐसा नहीं कर रहे थे. वह सच में गुस्से में थे.

सूसी और मैं दौड़ कर खिड़की के पास आये और बाहर झाँकने लगे. लेकिन बाहर अँधेरा था. कुछ दिखाई न दे रहा था. सिर्फ हंस के चीखने और एक अजीब-सी गुर्राने की आवाज़ सुनाई दे रही थी.

तभी पिता ने अहाते की बड़ी बत्ती जला दी और हमें सब दिखाई देने लगा.

मुर्गी के दरबे का दरवाज़ा खुला हुआ था. उसके सामने सफ़ेद पंख और चमकती भूरी फर्र आपस में गुत्थमगुत्था हो रखे थे. मुझे एक पूंछ दिखाई दी जिस पर काले रंग की गोल धारियाँ थीं.

'रेकून,' सूसी ने फुसफुसा कर कहा और अपना चोगा अपने सिर के ऊपर खींच लिया.

हंस ने अपनी गर्दन पीछे की और एक सफ़ेद सांप समान हमला किया.

मुझे रेकून का सिर दिखाई न दे रहा था. वह हंस के गले में धंसा हुआ था. मैंने रेकून के तेज़, नुकीले दांतों के बारे में सोचा. डर कर मैं भी अपना चोगा अपने सिर के ऊपर खिसकाना चाहता था. लेकिन मैं सूसी से बड़ा हूँ.

फिर हमारे बीच माँ आकर खड़ी हो गयी. 'हंस,' उसने फुसफुसा कर कहा.

अहाते का दरवाज़ा ज़ोर से खुला और पिता अंदर आ गये. उनके पास उनकी छड़ी थी. आपस में उलझे हुए फर्र और पंखों की ओर वह दौड़े आये. हमने देखा की उन्होंने अपनी छड़ी रेकून की पीठ पर दे मारी.

रेकून ने हंस को छोड़ दिया और दुबक कर पीछे हट गया. उसकी क्रोधित, तेज़ आँखें रोशनी में चमक रही थीं. फुफकारता हुआ और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ हंस पिता के सामने था. छड़ी को हवा में घुमा कर पिता रेकून को डरा रहे था. वह और हंस एक साथ रेकून का मुकाबला कर रहे थे.

तभी रेकून भाग गया, उसकी पूंछ ज़मीन को स्पर्श करती जा रही थी. पिता चिल्लाते हुए उसके पीछे भाग रहे थे.

'निकलो यहाँ से! दूर रहो हमारे घर से और हमारी मुर्गी से और हमारे चूज़ों से.....और हमारे हंस से!'

मुर्गी और चूज़े अब खूब उपद्रव मचा रहे थे, चूज़े चीं-चीं कर रहे थे और मुर्गी सदा की भांति चिंतित थी. हंस उनकी ओर दौड़ा और मुर्गी डर कर दरबे की अंदर चली गयी. हंस ने सारे चूजों को घेर कर इकट्ठा कर लिया. मैंने उसके सीने पर एक काला धब्बा देखा.
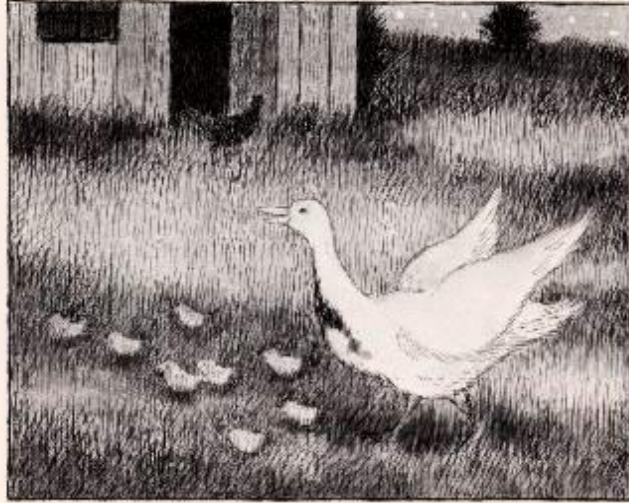
'मैंने मुर्गी के दरबे को ठीक से बंद नहीं किया होगा,' माँ सुबकते हुए बोली. 'सब मेरी गलती है.'

फिर वह भागते हुए सीढ़ियों से नीचे चली गयी.

सूसी और मैं उसके पीछे भागे. सूसी मुझे पीछे से खींच रही थी और बार-बार पूछ रही थी, 'आखिर क्या हुआ? मुझे बताओ क्या हुआ.' वह हमेशा अपने भद्दे से चोगे में छिप जाती है और कुछ देख नहीं पाती है.

'मुर्गी रेकून का निवाला बनते-बनते बची,' मैंने कहा. 'मेरे साथ आओ.'

जब हम नीचे पहुंचे. माँ हंस को उठा रही थी.

'क्या वह ठीक है?' मैंने पूछा.

मुर्गी भी साहस कर बाहर आ गई क्योंकि हंस अब माँ की गोद में था और उसके पंख नोच न सकता था.

'उसे भीतर ले आओ,' पिता ने कहा. मुर्गी और चूज़ों को दरबे में बंद करने के लिए वह लौट गये.

माँ हंस को उठा कर अंदर ले आई. उसे सिंक के निकट काउंटर पर खड़ा कर दिया और गर्म पानी से उसके पंख साफ़ किये. हंस ने हमें उसके निकट खड़े होने दिया. बिल्ली भी कूद कर उसके पास आ गई और उसने आवाज़ तक न निकाली. मुझे लगा कि यह शुभ संकेत नहीं था.
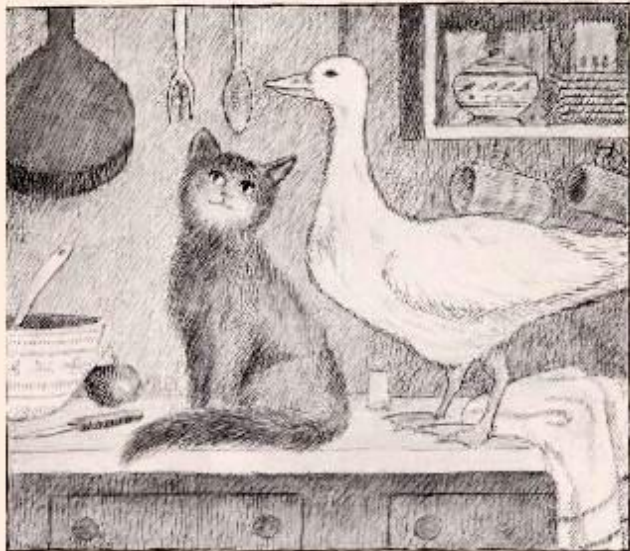
पिता एक टोकरा और एक पुराना कंबल ले आये. किचन के फर्श पर हंस के लिये एक बिस्तर बना दिया. फिर हम सब ऊपर वापस चले गये.

मैं सो न सका. कुछ देर बाद मैं दबे पाँव सूसी के पास आया और अंगुली से उसे कोंचा, 'क्या तुम जाग रही हो?'

'हर बार मुझे कोंचने की आवश्यकता नहीं है!' उसने कहा. 'बेशक मैं जाग रही हूँ. मुझे हंस की चिंता हो रही है.'

'मुझे भी,' मैंने कहा.

हम चुपचाप लेटे-लेटे उन झींगुरों और मेंढकों की आवाजें सुनते रहे जो निकट के तालाब में रहते हैं.

कुछ समय बाद सूसी ने कहा, 'मुझे लगा था कि हम हंस को पसंद नहीं करते हैं.'

मैंने आह भरी, 'बेशक हम उसे पसंद करते हैं. लेकिन हमें इस बात का पता न था.'

'ओह,' सूसी बोली. 'और मुझे लगता है कि हंस भी नहीं जानता था कि वह पिता को पसंद करता है.'
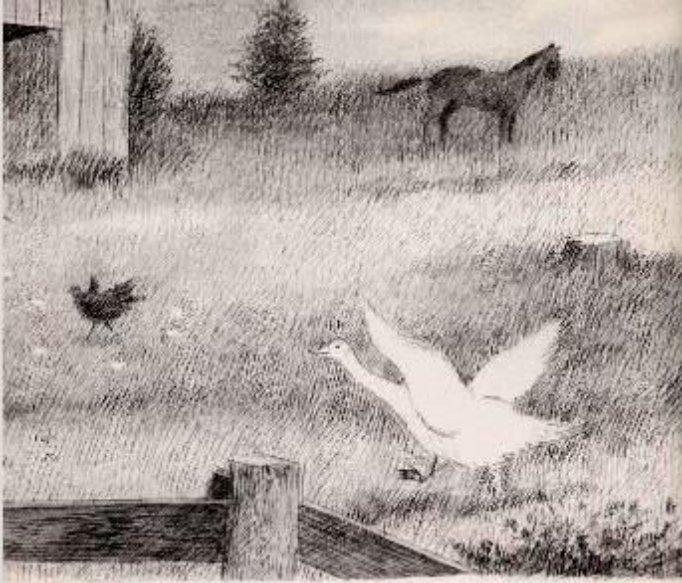
अगली सुबह नीचे से फुफकारने और चीखने की आवाज़ें आती सुनाई दीं. मैं उठ गया और मैंने सूसी को जगाया.

'तुम्हारा मतलब है कि अब उसने हमारी किचन पर कब्ज़ा कर लिया है?' पिता नीचे से चिल्लाये.

'मुझे क्या पता था कि वह इतनी जल्दी स्वस्थ हो जाएगा?' माँ ने कहा.

पिछला दरवाज़ा धड़ाम की आवाज़ के साथ बंद हुआ.

'ओ भयंकर, विशाल हंस!' पिता चिल्लाये. 'एक दिन तुम्हें मार कर तुम्हारा मांस खाने के लिये पका डालूँगा.'

मैं बिस्तर में लेट गया. यह जान कर अच्छा लगा कि सब कुछ पहले जैसा हो गया था.